अंतरिक्ष यात्रा की भीड़भरी तनहाइयां

ऐसा लगता है कि अंतरिक्ष यात्रा आसान नहीं है, कम से कम आपकी मानसिक व भावनात्मक हालत पर यह कहर ढा सकती है। खास तौर से अंतरिक्ष यान में यदि दो-चार लोग ही हों, तो हालात काफी बिगड़ सकते हैं। देखा जाए तो छोटे से अंतरिक्ष यान में दो-चार लोग भी भीड़ का रूप ले लेते हैं, ऊपर से कई हफ्तों या महीनों तक उन्हीं लोगों के साथ रहना बहुत खुशनुमा विचार नहीं है।

मंगल ग्रह पर यात्रियों को भेजने की तैयारियां चल रही हैं। मंगल की यात्रा में 520 दिन लगेंगे। इस यात्रा की दिक्कतों को समझने के लिए मास्को के इंस्टीट्यूट फॉर बायोमेडिकल प्रॉबलम्स और युरोपियन स्पेस एजेंसी ने एक प्रयोग शुरू किया है।

इस वर्ष 31 मार्च से एक फ्रांसिसी पायलट, एक जर्मन इंजीनियर और चार रूसियों को एक ऐसे कक्ष में कैद कर दिया गया है जो अंतरिक्ष की परिस्थिति की अनुकृति है। बाकी बातों के अलावा बाहरी दुनिया से उनके संवाद में 20 मिनट का अंतराल भी रखा गया है। मंगल और पृथ्वी के बीच संकेतों के आदान-प्रदान में इतना ही समय लगता है। यानी आप बोलें उसके बीस मिनट बाद ही कोई जवाब मिलता है। इन 6 लोगों को अभी 105 दिनों के लिए इस परिस्थिति में रखने की योजना है। पूर्व में 402 दिनों के लिए अंटार्क्टिका पर एक शोध स्टेशन में इस तरह के अनुभव से गुज़र चुके एक पायलट ने बताया है कि ऐसी भीड़भाड़ की परिस्थिति में जल्दी ही टकराव की स्थितियां निर्मित हो जाती हैं। उपरोक्त प्रयोग के बाद यह भी सोचा जा रहा है कि पूरे 500 दिन का तज़ुर्बा भी करेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***